

23

वर्ष : 2019-20

ISSN : 0976-5778

ईसुरी

बुन्देलखण्ड के आधुनिक साहित्यकारों पर केन्द्रित



विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा नामित शोध पत्रिका- संख्या : 48672

ईसुरी-23

(पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका)

वर्ष - 2020 ISSN : 0976-5778

प्रधान संपादक

चन्दा बेन

संपादक

राजेन्द्र यादव

(सचिव बुन्देली पीठ)

प्रबंध संपादक

आशुतोष कुमार मिश्र



प्रकाशक

बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,

सागर (म.प्र.)

14. मीत मेरे, दो विदा, मैं जा रहा हूँ : कांतिकुमार जैन	- प्रो. नरेन्द्र सिंह	69
15. आलोचक, नाटककार : पं. लोकनाथ द्विवेदी 'सिलाकारी'	- राहुल सिलाकारी (पत्रकार)	73
16. रमेशदत्त दुबे : एक जीवन्त व्यक्तित्व	- महेशदत्त अग्निहोत्री	76
17. बुन्देली गज़ल की राष्ट्रीय पहचान : महेश कटारे 'सुगम'	- प्रो. बहादुर सिंह परमार	78
18. साहित्य साधक : डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त बरसैया	- डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय	82
19. बुन्देली के अद्वितीय संपादक एवं संकलनकर्ता : प्रो. बलभद्र तिवारी	- डॉ. राजेन्द्र यादव एवं प्रदीप कुमार सौर'	87
20. वृंदावन राय 'सरल' के काव्य में समाज दर्शन	- डॉ. अवधेश कुमार	92
21. संवेदनात्मक यथार्थ के चितरे : शिवकुमार श्रीवास्तव	- अभिषेक दांगी	98

बुन्देलखण्ड : इतिहास, कला एवं संस्कृति केन्द्रित मूल्यांकन

● इतिहास

22. अमर शहीद मधुकर शाह बुन्देला	- भुवनभूषण देवालिया	103
23. 1857 की क्रान्ति और बुन्देलखण्ड की धरती	- डॉ. अरविन्द कुमार एवं डॉ. हिमांशु कुमार	107
24. इतिहास, जौहर और बुनकरों की चन्देरी	- डॉ. राजेन्द्र यादव	111

● कला

25. सागर का कला वैभव	- प्रो. विवेकदत्त झा	117
26. बुंदेलखण्ड एरण का मूर्तिशिल्प एवं प्राचीन लोकसंस्कृति	- प्रो. नागेश दुबे	123
27. नवागढ़ का प्राचीन एवं अर्वाचीन स्वरूप	- ब्रह्मचारी जयकुमार निशांत एवं राजीव कुमार जैन	130

● संस्कृति

28. लोकनाट्य परम्परा और बुन्देली संस्कृति	- डॉ. गंगाधर झा	135
29. तुलसीदास के साहित्य में बुन्देली लोकजीवन	- पद्मश्री डॉ. लक्ष्मीनारायण दुबे	138
30. बुन्देलखण्ड की प्राचीन नदियाँ	- एस.के. पारिख	141
31. बुन्देली लोक गाथाओं का सांस्कृतिक स्वरूप	- डॉ. दुर्गेश दीक्षित	146
32. बुन्देलखण्ड का धार्मिक पर्यटन	- डॉ. गौरी खोटे	151

● परिशिष्ट

33. ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी : स्मरणीय साक्षात्कार	- प्रो. ऊषा भटनागर	156
34. बुन्देली लघुकहानी : 'बररौटी'	- ओमप्रकाश रिछारिया	159

1857 की क्रान्ति और बुन्देलखण्ड की धरती

डॉ. अरविन्द कुमार एवं डॉ. हिमांशु कुमार*

बुन्देलखण्ड भारत देश का महत्वपूर्ण हिस्सा तथा हृदयस्थली है। यह नर्मदा, बेतवा, केन और चम्बल आदि नदियों से घिरा हुआ है। प्राचीन और ऐतिहासिक दृष्टि से यह मध्यप्रदेश का एक भाग था। बुन्देलखण्ड का इतिहास और संस्कृति स्वरूप का प्रमाण कई प्रकार की सामाग्रियों में मिलती है। (1) पुरातात्विक चित्र (2) वैदिक (3) पौराणिक साहित्य आदि में इसका उल्लेख है। बुन्देलखण्ड 1857 की क्रान्ति के लिए भी जाना जाता है। प्रस्तुत पुस्तक 'ओरछा राज्य में स्वतंत्रता आंदोलन' बुन्देलखण्ड की वैभवशाली इतिहास को पुनः जीवित करती है। प्रस्तुत पुस्तक में बुन्देलखण्ड का महाभारत काल से लेकर 1857 की क्रान्ति आन्दोलन तक के युद्धों का वर्णन मिलता है।

'ओरछा राज्य में स्वतंत्रता आंदोलन' पुस्तक के लेखक 'अभिनन्दन गोइल' जी हैं। 'अभिनन्दन गोइल' जी का जन्म मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ जिला में हुआ। ये बहुत प्रतिभावान तथा सहज सरल प्रकृति के लेखक हैं। इनकी निम्न रचनायें (1) जल ही जीवन है (2) राष्ट्रीय जागरण के पुरोधा- स्वामी विवेकानन्द (3) पीर घनेरी (बुन्देली में लोक कथाएँ) आदि के लिए बुन्देली साहित्य में जाने जाते हैं। अभिनन्दन गोइल जी हिन्दी एवं बुन्देली में लेख, समीक्षाएं लोक कथाएँ एवं कविताओं के लिए विशेष विख्यात हैं। अभिनन्दन गोइल

जी प्रमुख रूप से संवेदनशील मानवीय तथा प्रकृति प्रेमी कवि हैं। प्रस्तुत प्रस्तुत में बुन्देलखण्ड की ऐतिहासिक वैभवशाली स्मृति को सहेजने का काम किया है। बुन्देलखण्ड के इतिहास और 1857 की क्रान्तिकारी आन्दोलन को जानने और समझने के लिए यह पुस्तक बहुत उचित माध्यम है।

कभी कालिंजर, खजुराहों के वैभव, लाखा-पातुर, आल्हा-ऊदल जैसे महान वीर योद्धा और राजकवि जगनिक आदि कभी बुन्देलखण्ड के शान रहे हैं। लेखक ने बताया है कि "विन्ध्येलखण्ड में आये गहरवार पहले विन्ध्येला और फिर मुख-सुख के माध्यम से बुन्देला में परिवर्तित हो गया।" आज भी बुन्देलखण्ड के राजाओं का 1857 की क्रान्ति आन्दोलन के प्रति लगाव और उनके रियासत का वर्णन किया जाता है। जिसमें राजा रूद्रप्रताप सिंह बुन्देला, राजा भारतीचन्द्र सिंह बुन्देला, राजा मधुकर शाह, राजा वीर सिंह जू देव, राजा जुझार सिंह बुन्देला, राजा देवी सिंह बुन्देला, राजा पहार सिंह बुन्देला, राजा सुजान सिंह बुन्देला, राजा इन्द्रमणि सिंह बुन्देला, राजा जशवन्त सिंह बुन्देला, राजा भागवत सिंह बुन्देला, राजा उद्धवत सिंह बुन्देला, पृथ्वीसिंह बुन्देला, राजा सनवन्त सिंह बुन्देला, राजामान सिंह बुन्देला, राजा विक्रमसिंह बुन्देला, महाराजा रामशाह, राजा धर्मपाल सिंह बुन्देला, तेजसिंह, राजा

*हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003 मोबाइल : 7697425313